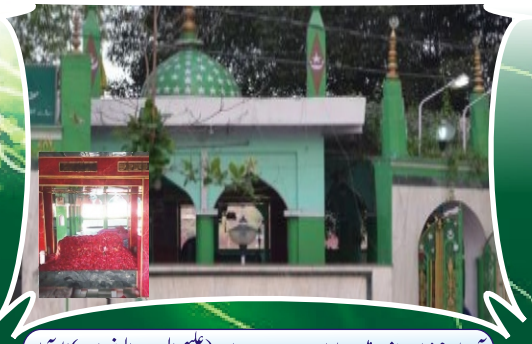

محمد صلی اللہ علیہ وسلم

۷۸۶/۹۲

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللہِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

صـ م ح م د ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ ح م د م ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ م د م ح ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ د م ح م ـلی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودہوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com

सलातुल मीमिल्अरबईन 7
दुरूदे चहल मीम

पेशकश

बमौक़ा रमदान 1437हि0
बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन
व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात
मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सुबहान क ला इलाह इल्लल्लाहु सुल्तान क या मन हुवल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल अ ह्दुस्स म दु सल्लि व सल्लिम व बारिक सर म दम्बि ज़ातिकल अह्दीयति व सिफ़तिकस्समदीयति अ़ला नूरिकल्लज़ी ख़लक़्तहू मिन्नूरिही अव्वलन फ़ अमर तहू अँय्यनज़ु र इला अन्वारिल अम्बियाइ फ़ ग़ शि य हुम मिन्नूरिही फ़क़ालू या रब्बनल्लाहु मन ग़श्शैना नूरुहू फ़क़ालल्लाहु हाज़ा नूरु हबीबी इनआमन्तुम बिही फ़ नज्अ़ल्कुमुल अम्बिया अ क़ालू आमन्ना बिही व बिनुबूवतिही फ़ क़ालल्लाहु अश्हदु अ़लैकुम क़ालू न अ़म फ़ कुल्त फ़िल्कुरआनिल हकीमि व इज़ अ ख़ ज़ल्लाहु मीसाक़न्नबीयीन लमा आतैतुकुम मिन किताबिवँ व हिक्मतिन सुम्म जाअकुम रसूलुम्मु सद्दिकुल्लिमा म अ़ कुम लतुअमिनुन्न बिही व ल तनसुरुन्नहू क़ा ल अ अक़्रर्तुम व अख़ज़्तुम अ़ला ज़ालिकुम इस्री क़ालू अक़्रर्ना क़ा ल फ़श्हदू व अना म अ़ कुम मिनश्शाहिदी न व नूरिकल्लज़ी जअ़ल्त वालिदैहि औलल वालिदी न व आलहू औलल आलि व अस्हाबहू औलल अस्हाबि व उम्म तहू औलल उममि वहु व नूरुकल हबीबुल अ ह्दुस्स म दु मोहम्मदुर्रसू लुल्लाहि व अ़ला वालिदैहि व आलिही व अहलि बैतिही व अस्हाबिही बिकुल्लि शअनिन जदीदिन इला अ बदिल आबादि।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

पाकी है तेरी नहीं कोई मअ़बूद सिवाए अल्लाह के बादशाहत है तेरी ऐ वह जो अल्लाह है नहीं कोई मअ़बूद सिवाए उस के जो तन्हा है बेनियाज़ है तू भेज सरमदी दुरूदो सलाम और बरकत अपनी ज़ाते अह़दियत व सिफ़ते स़म्दियत के साथ अपने उस नूर पर कि जिसे तू ने सबसे पहले अपने नूर से ख़िल्क़त फ़रमाया फिर तू ने उन्हें हुक्म दिया कि वह अम्बिया के अन्वार की त़रफ़ देखें पस आप ने अपने नूर से अम्बिया को ढ़ाँप लिया तो उन लोगों ने अ़र्ज़ किया ऐ हमारे पालनहार अल्लाह किस के नूर ने हमें ढ़ाँप लिया। तो अल्लाह ने फ़रमाया ये मेरे ह़बीब का नूर है अगर तुम इनपर ईमान लाओगे तो हम तुम्हें नबी बनाएंगे उन लोगों ने अ़र्ज़ किया हम इन पर ईमान लाए और इनकी नुबूवत पर तो अल्लाह ने फ़रमाया मैं तुम पर गवाह बनता हूँ उन लोगों ने कहा जी हाँ चुनान्चे तू क़ुर्आने ह़कीम में फ़रमाता है और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उनका अ़हद लिया जब मैं तुम को किताब और हिक्मत दूँ फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वह रसूल जो तुम्हारी किताबों की तस़्दीक़ करने वाला हो तो तुम ज़रूर उसपर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना, फ़रमाया क्यों तुमने इक़रार किया और इस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सबने अ़र्ज़ की हम ने इक़रार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह होजाओ और मैं खुद तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ, और अपने उस नूर पर कि बनाया तूने जिन के वालिदैन को तमाम वालिदैन में सबसे बर्तर और उन की आल को तमाम आल में सबसे बर्तर उन के अस्ह़ाब को तमाम अस्ह़ाब में सबसे बर्तर और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों में सबसे बर्तर और वह तेरे यक्ता बेनियाज़ नूरे ह़बीब मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और आप ﷺ के वालिदैन पर, आप ﷺ की आल पर आप ﷺ की अहले बैत पर और आप ﷺ के अस्ह़ाब पर हर नई शान के साथ हमेश्गी त़ौर पर।

नोट: जो शख़्स इस दुरूद को ४०/७/३ बार पढ़ने का अपना मअ़मूल बनाएगा उसे अरवाह़े अम्बिया से फ़ैज़ मिलेगा और वह स़ाह़िबे बस़ीरत होने के साथ साथ इल्मो हिक्मत की लाज़वाल नेअ़मत से नवाज़ा जाएगा और उस की हर दुआ़ क़बूल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।